IJETIR
ISSN (Online) 2583-0554
Impact Factor: 5.731
International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)
Volume 2, Issue 4, April 2022

हिंदी पत्रकारिता का उदासीन व्यवहार

डॉ सनकादिक लाल मिश्र
विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग
शा. शहीद केदारनाथ स्ना. महाविद्यालय,
मऊगंज, रीवा (म.प्र.)

अजीत कुमार मिश्र
शोध छात्र, हिंदी विभाग
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय
रीवा (म.प्र.)

शोध संक्षेप- समाचार पत्र समाज का प्रतिबि ब होते हैं। किसी देश-प्रदेश में पत्रकारिता की सक्रियता काफी हद तक सरकार या प्रशासन के स्वरूप को प्रभावित करती है। समाचार पत्र एक ऐसा माध्यम है, जो हमारे सामने जन सामान्य की स्थिति को सही रूप में प्रस्तुत करता है। भारत देश में पत्रकारिता का इतिहास करीब दो सदी पुराना है। कलकŽाा में अंग्रेजी भाषी पत्र क्त्र्त्त से निकलना प्रार भ हो गए थे। देसी भाषा के पत्र सन् क्त्व्- से निकलना प्रार भ हुए। दो सदी की इस यात्रा में पत्रकारिता ने नित नये मुकाम हासिल किए हैं। स्वाधीनता आंदोलन के समय पत्रकारिता ने अपनी ताकत का न केवल अहसास कराया बल्कि, जनसमूह को एकजुट कर शक्ति प्रदर्शन भी किया।

बहरहाल, स्वाधीनता मिलने के बाद हिंदी पत्रकारिता को देश में समाज व प्रशासनिक व्यवस्था में सुधार का दायित्व उठाना था लेकिन, ऐसा अपेक्षाकृत नहीं हो सका। व्यवसायी पूंजीपतियों के सामने कर्मचारी पत्रकारों ने हथियार डाल दिए। स्वच्छ वातावरण सशक्त समाज की आवश्यकता है। बढ़ते प्रदूषण के इस दौर में जब समाचार पत्रों को स्वाधीनता आंदोलन जैसी पर्यावरण बचाओ की अलख जगानी चाहिए तब पूंजीपति व नेताओं के सामने पत्रकारिता घुंघरू बांधे नृत्य कर रही है।

प्रस्तावना- ''एक स्वस्थ और साहसिक पत्रकार जब भी कोई समाचार तैयार करे, वह समाज के संबंधों और संरचना के प्रति जागरूक होकर करे, यह पहली शर्त है।''**क** इसके विपरीत देश-प्रदेश या जिले में हिंदी पत्रकारिता या पत्रकारों के हाथ किस तरह बंधे हुए हैं, इसके प्रमाण कई बार देखने को मिले हैं। फिर भी रीवा जिले की एक घटना का जिक्र बतौर उदाहरण करते हैं। रीवा जिले के सिरमौर तहसील अंतर्गत पड़री बीट वनक्षेत्र में विगत ख्- मार्च ख्ख्ख् की सुबह आग लग गई। वन विभाग समेत प्रशासन के सुस्त रवैये के चलते यह आग भयावह हो गई। मानव समाज का ठेका लेने वाले स्थानीय समाचार पत्रों में ख्त्र मार्च ख्ख्ख् के अंक में इससे संबंधित खबरें प्रकाशित नहीं हुई। केवल स्थानीय समाचार पत्र स्टार समाचार ने इस घटना को दूसरे मु य पृष्ठ क्रमांक प् में स्थान दिया। अगले दिन यानि ख्त् मार्च ख्ख्ख् को दैनिक जागरण व पत्रिका अखबार ने भी अंदर के पन्नों में इस घटना की खबर औपचारिता के तौर पर दे दी।

ठीक दो दिन बाद मऊगंज के बहुती जल प्रपात क्षेत्र और ग्राम पटेहरा के वन क्षेत्र में भी आग लगी। इस घटना को भी स्थानीय समाचार पत्रों देर से स्थान मिल सका। वहीं, प्रमुख अखबार कहे जाने वाले समाचार पत्र दैनिक भास्कर ने तो एक भी खबर मामले से संबंधित तब नहीं दी। हालांकि प्रशासन ने जंगल को बचाने की जद्दोजहद की लेकिन देर से। यदि समाचार पत्रों ने समय पर घटना को तरजीह देकर प्रमुखता से खबरों में उठाया होता तो जंगल की आग को जल्दी बुझाने जि मेदार सचेत होते और इतने समय की आग में वन्य जीव, बड़े वृक्ष, वनस्पति समेत वन स पदा का जो नुकसान हुआ, वह कम होता।

अध्ययन का उद्देश्य- उद्देश्य तय किये बिना शोध कार्य के परिणाम तक नहीं पहुंचा जा सकता। कोई भी शोध जो मानव समाज या लोकहित में उपयोगी न हो, उसे सार्थक नहीं कह सकते। अत: भारतीय समाज को जागरूक करने वाली हिंदी पत्रकारिता की वर्तमान स्थिति का अध्ययन करने का उद्देश्य जो निहित किया गया है, वह नि न है-

क. लोकहित, पर्यावरण हित में हिंदी पत्रकारिता का रूझान कम होना।

ख. व्यवसायिकता के चलते पत्रकारिता में योगदान देने वाले पत्रकारों के हाथ बंधे होना।

IJETIR
ISSN (Online) 2583-0554
International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)
Volume 2, Issue 4, April 2022
Impact Factor: 5.731

प. हिंदी पत्रकारिता का व्यवहार उदासीन €यों है ? इसके कारणों तक पहुंचना।

शोध प्रविधि- प्रस्तुत शोध कार्य प्राथमिक व द्वितीयक शोध विधि पर आधारित है। प्राथमिक शोध विधि में शोधकर्ता समूह या समूह के कुछ लोगों से चर्चा कर निष्कर्ष तक पहुंचने का प्रयास करता है। द्वितीयक शोध विधि में पत्र-पत्रिकाओं से डाटा एकत्रित किया जाता है। हिंदी पत्रकारिता की महŽाा का आंकलन कर वर्तमान में उसकी निष्क्रियता को समझने के लिए इन शोध विधियों का उपयोग किया गया है।

घटना विशेष में अखबारों के रवैये को हम तालिका विश्लेषण के जरिये भी समझने का प्रयास करते हैं।

दैनिक भास्कर	**दैनिक जागरण**	**पत्रिका समाचार**	**स्टार समाचार**
घटना की खबर ख्त्र मार्च से प मार्च के मध्य अखबार द्वारा प्रकाशित नहीं की गई।	इस प्रमुख अखबार ने एक दिन विल ब से समाचार का प्रकाशन किया।	इस चर्चित अखबार में घटना के दो दिन बाद समाचार दिया गया।	घटना के अगले दिन पृष्ठ क्र. प की प्रमुख खबर के रूप में प्रकाशन हुआ।
	इस पर भी अंदर के पृष्ठ क्रमांक क में खबर को स्थान देकर घटना की महŽाा को आंका गया।	घटना का समाचार अंदर के पृष्ठ में देकर औपचारिकता निभाई।	फिर भी प्रथम पृष्ठ या अंतिम पृष्ठ में समाचार नहीं प्रकाशित हुआ।
	निरंतरता नहीं बनाई, अगले दिन खबर का प्रकाशन नहीं हुआ।	घटना संबंधी अगले दिन समाचार प्रकाशित नहीं किया गया।	घटना के समाचार को निरंतरता प्रदान नहीं की गई।

दैनिक भास्कर, दैनिक जागरण, पत्रिका व स्टार समाचार रीवा जिले के प्रमुख समाचार पत्र हैं। उक्त तालिका विश्लेषण में दी सूचना से समझा जा सकता है कि जब इन चार प्रमुख अखबारों ने घटना विशेष को महत्व नहीं दिया तो अन्य अखबारों से हम €या अपेक्षा कर सकते हैं। वह घटना जो प्रकृति को क्षति पहुँचाती है, उस प्रकृति को, जिसके बिना मानव समाज की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

साहित्यकार डॉ रामेश्वर पाण्डेय प्रकृति को शŽद देते हुए लिखते हैं कि

''हमीं से हरापन, नयापन हमीं से,
हमीं से हैं भादौ व सावन हमीं से।''ख

डॉ पाण्डेय की उक्त पं€तयों से हम समझ सकते हैं कि प्रकृति, पर्यावरण मानव समाज का अनिवार्य अंग है। इस पर्यावरण की रक्षा के लिए पत्रकारिता अपने धर्म से पीछे €यों हट रही है। इस पर विचार करें तो पायेंगे कि देश में देसी-विदेशी भाषाओं में हजारों पत्र-पत्रिकाएं प्रकाशित हो रहे हैं। इन पत्र-पत्रिकाओं के सामने कठिनाई ज्यादा है। देश में अब साक्षर लोगों की सं या ख्त्र८ प्रतिशत से अधिक है। फिर भी पत्र-पत्रिकाओं को पढ़ने वाले पाठकों का अभाव है। व्यापार, व्यवसाय की कमी, देशी भाषा के पत्रों में विशेष रूप से विज्ञापनों की कमी के साथ पूंजी का अभाव है। €योंकि जिसके पास धन है, वो उसे धनोत्पादन के काम में लगाते हैं। पत्रों का निर्माण तथा प्रकाशन अभी तक इस देश में धनोत्पादन का उŽाम और खास व्यवसाय नहीं बन पाया है। जनता की गरीबी सबसे बड़ी कठिनाई है, जो प्रतिदिन ८ रूपये भी व्यय करके पढ़ने की क्षमता प्रदान करती, चूंकि यह गरीब जनता पूरे समय अपनी रोजी-रोटी की तलाश में ही व्यस्त रहती है। वहीं, गमनागमन के साधनों का ऐसा भीषण अभाव है कि दूर-दूर के गांवों में आज भी नियमित पत्रों का पहुंचना स भव नहीं है।

आज भी भारत के ज्यादातर गांवों में सप्ताह में दो बार से अधिक डाक पहुंच जाये, यही बहुत है। सामान्यत: एक ही बार पत्रों का थैला लिये मीलों की मंजिल तय क रता हुआ डाकिया पहुंच पाता है। जिस देश में पत्रकारिता ऐसी कठिनाई का सामना कर रही है, वहां पत्रकारिता व

पत्रकारों का विकास कैसे हो सकता है? ''इस महान कर्म में जो लोग लगे हुए हैं, वह जानते हैं कि जीवन यापन तथा वजूद बनाये रखना भी कितना कठिन हो रहा है। यही कारण है कि इस देश में योग्य व्यf€तयों का बहुधा अभाव दिखाई दे रहा है।''प

वर्तमान में भारत के पत्रकारों हेतु न धन है, न सुख है, न सरल मार्ग है और न ही जीवकोपार्जन का अच्छा और निश्चित साधन। आज भारत का पत्रकार वही हो सकता है, जो गरीबी और दरिद्रता को अपनाना चाहता हो, जो त्याग एवं अपरिग्रह के महान पथ का पथिक बनने का कलेजा रखता हो। जो देश की सेवा के पुनीत आदर्श से प्रभावित होकर अपनी कामना तथा जीवन की सारी आशा का इस महान यज्ञ में होम कर देने हेतु कटिबद्ध हो। पत्रकार समाज के प्रहरी होते हैं। ''वह सही समय पर सही सूचना देकर समाज को सोते से जगाते हैं, सामाजिक बुराइयों दोषों, कुरीतियों आदि को दूर करने के साथ-साथ समाचार-पत्रों के माध्यम से नये आचार-विचार और व्यवहार को गति देते हैं।''ब कह सकते हैं कि इस पथ के पथिक सदा और सर्वत्र थोड़े ही होते हैं। इसके इतर, आज कई योग्य पत्रकार पैसा कमाना चाहते हैं, वे ज्यादा अर्थकर पेशे के लिए प्रयासशील होते हैं एवं जो देश की भयावनी बेकारी के शिकार होकर काम की खोज में भटककर आ भी जाते हैं, वे इस कठिन और तपस्वी जीवन में तब तक रोकर पड़े रहते हैं, जब तक कोई दूसरा उपाय सामने नहीं आ जाता। भला ऐसे लोगों से पत्रकार कला कब एवं कैसे तुष्ट समुन्नत हो सकती है। हर दिन दैनिक जरूरतों के लिए जूझने वाले इन पत्रकारों से प्रकृति हितैषी क्रांतिकारी लेखों की अपेक्षा करना ठीक नहीं है, चूंकि ऐसे लेख लिखने मैदानी स्तर पर जितनी मेहनत करनी पड़ती है, उतनी ही दिमागी कसरत भी हो जाती है, जो तंग व्यक्ति पत्रकार के लिए स भव नहीं है। उस पर भी मालिकान या विज्ञापन प्रतिनिधियोंं का दबाव पत्रकारों को पर्यावरण या समाज कहित के बारे में ग भीरता से सोचने की इजाजत नहीं देता।

''बड़े और यातिनाम अखबारों की तुलना में छोटे आंचलिक अखबार बाजार और विžीय बाधा कम अवरोधित होते हैं। बड़े अखबारों के लिए प्रधानमंत्री, मु यमंत्री और युक्ता मुखी खबर प्रमुख होती है तो गांव-कस्बों के स्थानीय अखबारों के लिए गली में फैला कचरा, बेरोजगारी, कटते हुए जंगल और बढ़ते भ्रष्टाचार के मामले ही मु य समाचार होते हैं। आज उ मीद की कोई किरण बची है तो वह इन्ही छोटे अखबारो से है, जो छोटे-छोटे प्रयासों से मीडिया के सामाजिक सरोकारों के उžारदायित्व का निर्वाह कर रहे हैं।''भ समाचार पत्र जनमानस को जगाने का सर्वोžाम माध्यम हैं। ''पर दुर्भाग्य से स प्रति पूंजी की प्रधानता वाले जटिलतर होते समाज में दीर्घ बौद्धिक संघर्ष से अर्जित अतीत की महान परप पराओं को आज के समाचार पत्रों ने लोभ-लाभ की विकृत गणित के कारण भुला दिया है।''म उपभोक्तावाद या व्यवसायीकरण की राह में चलकर आज की पत्रकारिता अपने लक्ष्य से भटकी हुई प्रतीत होती है। धर्म, संस्कृति की ध्वजा फहराते भारत देश में प्रकृति का तिरस्कार हो रहा है। उस प्रकृति का जिसकी पूजा करना हमारे धर्म ग्रंथों ने ही सिखाया है। इस पर भी पत्रकारिता, विशेषकर हिंदी पत्रकारिता प्रकृति हितों के प्रति लोगों को जागरुक करने का कार्य ठीक से नहीं कर रही है। यह पत्रकारिता की वह परिभाषा स्मृति में आती है, जो डॉ कैलाशनाथ पाण्डेय ने लिखी है। डॉ पाण्डेय लिखत हैं कि ''समाज एवं समय के संदर्भ में सजग और सचेत या जागरुक रहकर नागरिकों में दायित्व बोध कराने की कला को पत्रकारिता कहते हैं।''त्र आज हिंदी पत्रकारिता को उक्त परिभाषा के अनुरुप अपनी इस कला का उपयोग प्रकृति की सुरक्षा हेतु जनआंदोलन खड़ा करने में करना चाहिए, जिससे पत्रकारिता के उद्देश्यों की भी पूर्ति हो सके और अंदर से मजबूत सशक्त भारत का निर्माण भी हो सके।

निष्कर्ष

पत्रकारिता का मूल दायित्व आमजन मानस को जागरुक करना है। व्यवसायिक गतिविधियों या अन्य तरह की चटपटी खबरों की दौड़ में पत्रकारिता अपना मूल कार्य नहीं कर रही है। वर्तमान की पर्यावरणीय समस्या को देखते हुए आवश्यकता है कि हिंदी भाषी सभी अखबारों में पर्यावरण बचाव से संबंधित सभी छोटी-बड़ी खबरों को महत्व दिया जाये। गर्मी के दिनों में अधिकांशत: जंगलों में आग लगती है। जंगलों में विचरण करने वाले मनुष्यों की वजह से भी कई बार इस तरह की घटना होती है, जिससे पर्यावरण जीवन को काफी नुकसान पहुँचता है। घटना होने के बाद प्रशासनिक तंत्र की लापरवाही पर्यावरण को आघात पहुँचाने का दूसरा कारण है, इसमें समाचार-पत्रों का उदासीन व्यवहार भी शामिल है। ऐसे में पत्रकारिता को सजग रहकर इन दोनों पहलुओं को समय-समय पर उजागर करते रहना चाहिए। इस दायित्व से पीछे हटने पर पत्रकारिता मानव समाज की आने वाली पीढ़ी का अप्रत्यक्ष रुप से नुकसान करने में ही सहायक कहलायेगी।

ISSN (Online) 2583-0554

International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)

Impact Factor: 5.731

Volume 2, Issue 4, April 2022

संदर्भ सूची–:

- प्रामाणिक प्रयोजन मूलक हिंदी, डॉ पृथ्वीनाथ पाण्डेय, पृष्ठ फ्भ्ख् शेखर प्रकाशन, इलाहाबाद, ख्स्त्र
- वृक्ष की व्यथा, डॉ रामेश्वर पाण्डेय, पृष्ठ स्त्रस्त्र, पुष्प प्रकाशन, नई दिल्ली, ख्क्स्त्र
- हिंदी पत्रकारिता कल आज और कल, रसा मल्होत्रा, पृष्ठ क्त्, संजय प्रकाशन, नईदिल्ली, ख्–
- हिंदी पत्रकारिता: संवाद और विमर्श, कैलाशनाथ पाण्डेय, पृष्ठ फ्ख् लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, ख्क्स्त्र
- मीडिया के सामाजिक सरोकार, निशांत सिंह, पृष्ठ क्भ्ख् राधा पŽकेशन, नई दिल्ली, ख्स्त्र
- हिंदी पत्रकारिता: संवाद और विमर्श, कैलाशनाथ पाण्डेय, पृष्ठ फ्–, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, ख्क्स्त्र

Copyright to IJETIR
www.iciset.in